divinepramilabhagwan.com

गीता भगवान - तुलसी माता

गीता भगवान का पत्र तुलसी माता के नाम

"कृपा करे जे आपणी जो गुरु का शब्द कमाय"

गुरु का शब्द वही कमाता है जो अपनी कृपा अपने ऊपर करे। शुरूआत में, बीच में यां अन्त में - अपनी ही कृपा काम करती है। गुरु की कोई बड़ाई नहीं है जो कहे कि मैंने तुम्हें ज्ञान दिया है। वो गधा है - जो किसी को अपना शिष्य समझता है, जब है ही भगवान। हमारी दृष्टि है ही भगवान पर, कोई भी शिष्य गुरु है ही नहीं। ये भी कल्पना है, तुम्हारी ही भावना है जो किसी में विश्वास रखते हो। फिर कभी जब तुम ही भावना बदल दोगे तो गुरु एक साधारण मनुष्य दिखेगा। यह एक कठिन में कठिन बात है जो एक साधारण मनुष्य में भगवान (अवतार) का विश्वास होवे और सारी उम्र चले। पर उससे भी कठिन काम है अपने में भगवानपने का निश्चय होना, और वो कठिन में कठिन काम हमने लिया है, जो सब की आषीष से पूरा होगा। जड़ और चेतन की आशीष मुझे बनायेगी। नम्रता और प्रेम के बिना यह मंजिल हाथ नही आयेगी। मैं तो सिर्फ गुरु को राज़ी करने की नहीं अपितु आप सभी में से एक एक को राज़ी करने का जी जान से प्रयत्न करती हूं। जब तक मेरे से एक भी खुश नहीं हुआ है तब तक आंखों में नींद नहीं है। काश आप मेरे दिल को पढ पाओ, समझ सको। कितने ही सतगुरों की दिल फूलों के समान कोमल है। मैं कैसे अकर्ता समदृष्टि और करूणामय हूं यह बात जो समझ पायेगा वही खुद इतना बन पायेगा।

यह एक कठिन में कठिन बात है जो एक साधारण मनुष्य में भगवान (अवतार) का विश्वास होवे और सारी उम्र चले। पर उससे भी कठिन काम है अपने में भगवानपने का निश्चय होना।

सभी के पत्र शुकरानों से भरकर आते हैं, मुझे भी शर्मसार कर रही हो तुम और अपने आप को भी। सभी पूछते हैं कि - तुलसी अभी तक द्वैत में खड़ी है क्या वो अपने को भगवान नहीं जानती? अभी तक जो तुम्हारे (गुरु के) शुकराने गा रही है? जबकि राजा जनक ने कहा है कि न गुरु है न शिष्य - तो अब किस को नमस्कार करूं? ये स्थिति अभी तक तुलसी की नहीं हुई है क्या? उन्हें क्या जवाब दूं? मुझे तो शर्म से डूब मरना पड़ता है जब तुम्हारे में से

किसी के भी शुकराने मेरे लिए लिख कर आते हैं। गुरु के रहते हुए मेरा नाम और कीर्ति हुई है, जो गिराने वाली है। अब फिर जब तक मेरी इतनी निन्दा नहीं होगी तब तक मन की परीक्षा भी नहीं होगी। अब तक तो सभी से प्रेम श्रद्धा और विश्वास मिला है, तो कोई परीक्षा ही नहीं हुई है। अब जिन्दगी न जाने कितनी है? भगवान जरुर हर बात में पक्का करके देखेगा। अगर कील पक्की है तो हथोड़ा भी पक्का लगायेगा। भले लगाये, मैं तो तैयार हूं। जैसे आग से सोना लालो लाल होकर निकलता है वैसा भी होगा गुरु की मेहर से, सब परीक्षायें देकर पास होंगे। दिलबर नहीं रूठे बाकी कातिल के कुहारे (तलवारें) भी मजूंर हैं।

गुरु राज़ी भी उसपर होता है जो अपने पर राज़ी हो और हर समय जुबान पर वाह गुरु हो। गुरु नानक ने अंगद और सभी पर पत्थर फैंके, पागल बन कर दिखाया। सब छोड़ कर चले गये पर अंगद खूना खून होने पर भी नहीं दौड़ा। बोला - आये हैं तेरे दर पर तो मर कर उठेंगे। श्मशान में आकर कोई जीने की उम्मीद रखेगा? ये पद है मर के मिट्टी होने का। प्रेम में दो नहीं रहेंगे पर एक प्रीतम ही रह जायेगा, जहाँ मैं नहीं रह जायेगी। मैं है वहां प्रेम नहीं है। प्रेम में कोई हिसाब (गणित) नहीं है कि मैंने इतना किया, मुझे इतना नहीं मिला। भगवान को जितना प्रेम करेंगे उतना कम है। जब रह नहीं पाते हैं, तभी तो प्रेम करते हैं फिर किसी पर कैसी भी मेहरबानी नहीं करते। प्रेम करने वाले को वहाँ भी आनन्द है। अगर फल की इच्छा रखेंगे तो आनन्द चला जायेगा।

गुरु राज़ी भी उसपर होता है जो अपने पर राज़ी हो और हर समय जुबान पर वाह गुरु हो।

कंजूस मत बनो परन्तु उदार बनो। गुरु की करनी गुरु भरेगा, चेले की करनी चेला। ऐसे अपना फर्ज पालते आओ बाकी गुरु पाले या न पाले, यह तो गुरु जाने। घर की चारदीवारी में अकेले बैठने से शैतान आता है। मन की भी अजीब हालतें हैं। दुनिया की हालतें देखकर न चाहते हुए भी शुकराने निकल जाते हैं।

- ओम् 💕

गीता भगवान को तुलसी माता द्वारा पत्र का उत्तर

कई लोग सवाल पूछते हैं कि - गुरु के शुक्राने अब तक क्यों मान रहे हो? राजा जनक नें हाथ पैर जोड़ने छोड़ दिए, नमस्कार भी बोला किसको करूं? वह भी तो द्वैत हुआ?

जो सवाल पूछते हैं, तो क्या वह निश्चय में नहीं हैं। राजा जनक से तो सभी रीस करतें हैं। परंतु राजा जनक है कौन? राजा जनक की नगरी को आग लगी तो कहा - "जिसकी जली वही पछुताए" ऐसी स्थिति किसकी है? जो सर्वनाश हो जाए तो भी मन न चले? राजा जनक की राजाई में रहने, खाने भोगने की रीस, नकल तो जल्दी कर सकते हैं परंतु राजाई वन की तरह समझना - उस में दम चाहिए।

मैंने अद्वैत में द्वैत अपनी मन मर्जी (sweet will) से स्वीकार किया है क्योंकि अंहकार से बचने के लिए नम्रता और प्रेम अंत घड़ी तक ज़रूरी है। इस अहंकार को रस्सीयां बांध कर समुद्र में डुबो कर आए तो भी वहां से फिर वापिस लौट कर चला आएगा। ऐसा बेचारा शुभ अहंकार भी गुप्त रूप में ठगने वाला है। शुभ अंहकार बदली होकर अशुभ अहंकार यानि जीव भाव आ जाता है। अंदर कोई डर नहीं कि गिर न जाऊँ जो शुक्राने मानूं परंतु स्वभाविक अंदर से ही शुक्राने निकल रहें हैं। उस का मतलब यह नहीं कि मेरे अंदर द्वैत का वासा जमकर बैठा है या मैं जीव हूं। द्वैत होते हुए भी मैं अद्वैत आत्मा में स्थित हूं। मेरे आगे आपका मिसाल ही काफी है, जो मुझे शुरु से लेकर अंत तक सावधान करता है और कराता रहेगा।

मैंने अद्वैत में द्वैत अपनी मन मर्जी (sweet will) से स्वीकार किया है क्योंकि अंहकार से बचने के लिए नम्रता और प्रेम अंत घड़ी तक ज़रूरी है।

पूर्ण निष्ठा की स्थिति में रहते हुए भी आपके जैसा प्रेम और इतनी नम्रता देख कर कोई नहीं कह सकता कि यह अभी तक द्वैत में है। मैंने गुरु का लक्ष्य अच्छी तरह आजमाया है, उसमें कोई कमी नहीं हो सकती। जो जितनी महिमा के लायक है उतनी महिमा गाना योग्य (Right सही) है। जो गुरु के शुक्राने नहीं मानता उस का मुख जला हुआ है। "जिस मुख नाम न उचरे तिस मुख थुक्का मार"। गुरु नानक ने भी बोला है। नाम

यानि हरि, हरे राम: राधे श्याम नहीं अपितु निराकार और साकार के शुक्राने कहें हैं। शुक्राने मानने से कोई अद्वैत में गिर नहीं जाते हैं। फल जितना पक्का है उतनी ही डाली झुकी हुई दिखाई देती है। "ब्रह्मज्ञानी ऊंचे ते ऊंचा मन अपने है सब ते नीचा"। गुरु के शुक्राने तो मानने ही मानने हैं पर जो सुनने वाले हैं उन के भी लाख शुक्राने हैं जिन्होंने हमें इस रास्ते पर चढ़ने में बहुत मदद की है। प्यारे प्रीतम आपकी चिट्ठी जब भी आती है तो मुझे हैरानी होती है कि आप इतने महान और सर्वशक्तिमान होते हुए भी कितने प्यार और नम्रता से पत्र लिख रहे हो और शुक्राने मान रहे हो, बाकी मेरे शुक्राने मानने से आपको लज्जा व शर्म आ रही है-जो सच है और जो जिस योगिता के लायक है उसके लिए न जाने कैसे हाथ और मुंह कैसे चलने लगते हैं। खुद को भी मालूम नहीं। प्रकृति से ही उन्हें महानता मिलती है क्योंकि वह उस के लायक है। बनावटी बात यां झूठी प्रशंसा करे तो शायद एक शब्द भी न निकले और नाहीं हाथ लिख सके। मुझे पत्र लिखते समय मालूम ही नहीं पड़ता कि क्या लिख रही हूँ। पूछने वाले भी शायद खुद कर्ताभाव में आकर पूछते हैं कि तुलसी ऐसा क्यों लिखती है, अद्वैत में नहीं द्वैत में है शायद। आत्मा में ना ही द्वैत है न अद्वैत है। हर ऐक अपने निश्चय को खुद जान सकता है। द्वैत से अद्वैत में आना सरल है। जब गुरु बताता है कि तू खुद खुदा है तो नशा चढ़ जाता है। परंतु अद्वैत होते हुए द्वैत में रहना कठिन है - कठिन से कठिन कार्य है। मन ऊंट के अहंकार में आ जाता है तो गुरु को भी जवाब देने में कृतघ्न होने में देर नहीं करता। गुरु फिर भी नम्रता याद दिलाएगा, झुकना सिखाएगा, जिस में ही अगले की भलाई और उन्नति समाई हुई है। बल्कि मन उसको भी एक साधारण मनुष्य समझ कर मजिंल से गुमराह हो जाता है। उस समय मन समझता है कि गुरु को भी इच्छा हुई है। गुरुडम में आ गया। अद्वैत में से आ कर द्वैत में पड़ा है।

आत्मा में ना ही द्वैत है न अद्वैत है। हर ऐक अपने निश्चय को खुद जान सकता है। द्वैत से अद्वैत में आना सरल है। ... परंतु अद्वैत होते हुए द्वैत में रहना कठिन है - कठिन से कठिन कार्य है।

ऐसे नीच मन को हर पल गुरु के ही शुक्राने में ही झुकना अच्छा है। इस में बहुत गहरा राज छुपा हुआ है। मन कभी भी अपना शीश नहीं निकालेगा और न कभी अज्ञान रुपी गड्ढे से बाहर निकलेगा। जिस समय इस मन की साराह हो जाती है उस समय मन किसी की भी सुनने वाला नहीं है, फिर गुरु को भी सिखाने आएगा कि मेरी भावना को गुरु जी आप भी नहीं समझ सकते हैं। गिरावट बस यहीं से शुरु होती है जब गुरु के शुक्राने भूलते हैं। कभी भी किसी शास्त्र यां वेदांत में या इतिहास में ऐसी कोई बात नहीं लिखी हुई है कि निराअहंकार होने से वह निश्चय से गिर गए हैं। तो सभी उदाहरण और दृष्टांत अहंकार के दिए हुए हैं। कौन सा नुकसान पड़ता है अगर प्रेम और नम्रता में मन झुका हुआ है। उस में कौन सी कमी हो गई? "मन नींवा मत ऊंची"।

मैं बड़े दादा को भी आज दिन तक देखती हूँ कितनी नम्रता करते हैं। ऐक दिन Bombay से बड़े दादा जी का lecture सुन कर अंदर खयाल आया कि इतने महान होते हुए भी कैसे न अपने को झुका रहे हैं। ऐसे शब्द बोले जैसे अपने को कुछ भी नहीं समझ रहे थे।

समय पर आप सभी का आदर्श मुझे बहुत कुछ सिखा रहा है। और आगे भी सिखांएगे, सावधान करते रहेंगे। सचमुच में लाखों लाख शुक्राने।

बड़े दादा के ज्ञान वाले पत्र में एक point लिखी है कि जो गुरु हमें रात दिन भगवान सुनाता है और याद दिलाता है उसे बहुत ही इज्ज़त से देखना चाहिए, जो भगवान के बिना दूसरी बात सुनाता ही नहीं है - वो कितना पाक और पवित्र है। जिससे साबित होता है कि नम्रता अमर पद प्रदान करती है। इसमें कौन सी कमी है? किन्तु उन्हे यह बात बतानी जरूरी है कि जो अपने को न पहचान कर केवल गुरु को राज़ी करने के लिए शुक्राना मानते हैं या उस को खुश करते हैं क्योंकि अपने को पहचानने और निश्चय करने में कठिनाई समझ में आती है और कहते हैं कम से कम गुरु के शुक्राने तो मानूं, जिस से गुरु राज़ी हो जाए परंतु मुझे पूरा यकीन है - "नानक लक्ष्मण मेरा नाम उसमें नहीं शक गुमान।"

प्यारे भगवान खाली बैठी थी जो ये मनोरंजन दे दिया आपने जैसे busy रहूं। अच्छा किया जो ये प्रश्न पूछा। परंतु ये जो लिखा है कि - "शर्म आती है जो आप में से कोई भी मेरे लिए शुक्राने लिखता है ये सराहन (महिमा) मेरे गुरु की होनी चाहिए।"

सो आप बड़े दादा भगवान एवम अन्य आदर्श रूपों से कभी भी अलग नहीं हैं। मुझे तो सब एक ही नज़र आते हैं, जिस और नज़र करती हूं, मेरे साजन ही सामने हैं। आप तो सचमुच अकर्ता हैं। मुझे पक्का निश्चय है आप पत्र लिखने वाले नहीं हो। हमारी ही खींच और प्यार आप से पत्र लिखवाती है।

प्यारे भगवान जिस समय सम्बंधी भी भगवान की भावना रखते हैं "जिस प्रभु स्यू नाहीं चारा ताकी कीजै सद नमस्कारा।" तभी वह भी कुछ लाभ पा सकते हैं। सभी ज्ञान रूपी गंगा में डुबकियाँ लगाते होंगे। आप का जीवन ही सृष्टि के उद्धार के लिए है। जिन से वायदे किए हैं वो जरूर पूरे करने हैं। सोई वो जो सब मन की बिमारी में, दोष से दृष्टि की वजय से भ्रम लगते हैं। मन केवल द्वैत से रहित, तू और मैं दूर रहने से अतिइन्द्रिय आनंद पाने का अनुभव कर सकता है। नहीं तो जिन्दगी जहर बन जायेगी। यह बिल्कुल सत्य है कि "संत न होते जगत में तो जल मरता संसार।" संत वो है जो बताए - तू कौन हैं? बाकी साधु तो दुनिया में बहुत हैं जिन का कोई अंत ही

संत वो है जो बताए - तू कौन हैं? बाकी साधु तो दुनिया में बहुत हैं जिन का कोई अंत ही नहीं है।

नहीं है। लेकिन गुमराह करने वाले भी हैं जिन्हें अपना पेट का सवाल लगा हुआ है, माना वो मजदूर हैं। सच्ची करुणा तो सच्चे गुरु में ही है जिसे कुछ नहीं चाहिए।

"आशा न करें और की आप करे उपकार, गुरु ऐसा चाहिए जो छुड़ाऐ संसार।"

जिन मायावी बंधनों में मन फंसा पड़ा है उससे आ कर छुड़ाए। वो तो केवल निष्कामी निस्वार्थी गुरु ही कर सकता है जिस को कोई भी इच्छा नहीं है। हम भाग्यशाली हैं जो समय पर छोटी उम्र में सच्चा गुरु मिल गया जिसने सच्चा प्रत्यक्ष अनुभव कराया कि तू ही वह ब्रह्म हैं। यही भाग्य की निशानी है जो समय पर जन्म-मरण, दुख-सुख, मान-अपमान, संयोग-वियोग से ऊपर कर दिया नहीं तो सारी दुनिया दुख रुपी समुद्र में गोते खा रही है, वैसे मेरी भी पशुओं और हैवानों जैसी ज़िन्दगी गुजरती।

- ओम् 💕